हिमाचल प्रदेशः बेमौसमी सब्जियों का एक उभरता हुआ केंद्र

हेम लता एवं अखिलेश शर्मा

चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश को उत्तर भारत का सब्जियों का कटोरा कहा जाता है । यह राज्य पश्चिमी हिमालय में समुद्र तल से औसत 350 मीटर से 6975 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। राज्य की लगभग 90 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। कृषि हिमाचल प्रदेश के लोगों का मुख्य व्यवसाय है और राज्य की अर्थव्यवस्था में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य की अनुकूल कृषि–जलवायु परिस्थितियों के कारण इसे देश के प्राकृतिक ग्लास हाउस के रूप में जाना जाता है। राज्य में कृषि पारंपरिक अनाज की खेती से उच्च मूल्य वाली नकदी फसलों की ओर स्थानांतरित हो रही है और ठंडे जलवायु क्षेत्रों में फसल पैटर्न में बेमौसमी सब्जियों की फसलों की शुरुआत के साथ एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। प्रदेश में सब्जियों की खेती लगभग 87.48 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में की जाती है, जिससे 1867.74 हजार टन उत्पादन होता है जो 1991 के दौरान केवल 476 हजार टन था। इसमें से विदेशी सब्जियों की खेती 0.79 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में की जाती है जिससे 17.90 हजार मीट्रिक टन उत्पादन होता है जिसकी उत्पादकता 22.43 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर है। इसके अलावा हिमाचल प्रदेश की सब्जी उत्पादकता 20.28 टन हेक्टेयर है जो राष्ट्रीय उत्पादकता (17.97)टन प्रति हेक्टेयर से अधिक है।

बेमौसमी सब्जियों की खेतीः सामान्य मौसम से पहले या बाद में ताजी सब्जियों का उत्पादन बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन कहलाता है। हिमाचल में बेमौसमी सब्जियां जैसे टमाटर, शिमला मिर्च, हरी मटर, बीन्स, गोभी, फूलगोभी, मूली, शलगम, गाजर ,आलू और ककड़ी के साथ–साथ ब्रोकली, सलाद पत्ता (लेट्यूस), चेरी टमाटर, यूरोपीय गाजर, लाल बंद गोभी, पार्सले, ब्रूसल्स स्प्राउट, एसपैरागस, जुकिनी, लीक, चाइनीस गोभी, पाक चोई, केल, स्नोपीस (मिथी फली), रंगीन शिमला मिर्च व सेलरी जैसी विदेशी सब्जियों का उत्पादन किया जाता है। प्रदेश में उगाई जाने वाली सब्जियों को बेमौसमी (ऑफ सीजन) कहा जाता है क्योंकि ये सब्जियां बाजार में ऐसे समय में पहुंचती है जब मैदानी इलाकों में इनका उत्पादन उपलब्ध नहीं होता है तथा ये सब्जियां अपने स्वाद, मिठास और कुरकुरेपन के लिए जानी जाती हैं। यह सब्जियां स्वादिष्ट होने के साथ–साथ अधिक गुणकारी तथा लाभप्रद भी होती हैं। हिमाचल प्रदेश में बेमौसमी सब्जियों में टमाटर की खेती किसानों के बीच सबसे अधिक लोकप्रिय हो रही है। टमाटर हिमाचल प्रदेश के निचले और मध्य–पहाड़ियों में प्रमुख नकदी फसल के रूप में उगाया जाता है। सोलन, सिरमौर और कुल्लू जिलों में राज्य के कुल उत्पादन का 86 प्रतिशत उत्पादन होता है । वर्तमान में, राज्य 539.5 हज़ार मीट्रिक टन टमाटर, 329.91 हज़ार मैट्रिक टन मटर, 177.88 हज़ार मीट्रिक टन पत्ता गोभी, व 139.1 हज़ार मीट्रिक टन फूलगोभी का उत्पादन करता है।

मध्य जून से सितंबर ऐसे महीने हैं जब पड़ोसी राज्य पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली के बाजारों में सब्जियां उपलब्ध नहीं होती है। उदाहरण के लिए मानसून के बाद मैदानी इलाकों में टमाटर बाजार से समाप्त होने लगता है। वहीं प्रदेश से टमाटर जुलाई से मैदानी इलाकों में भेजना शुरू किया जाता है और यह आपूर्ति अक्तूबर तक जारी रहती है। इस प्रकार हिमाचल से सब्जी उत्पादन उत्तरी भारतीय मैदानों में ताजा सब्जियों की नियमित आपूर्ति करता है। नतीजतन, हिमाचल की बेमौसमी सब्जियों को कम प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है और उन्हें अच्छा पारिश्रमिक मिलता है। प्रदेश में कुल्लू, सोलन, मंडी, शिमला, कांगड़ा, सिरमौर, लाहौल स्पिति और किन्नौर बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन वाले प्रमुख जिले हैं। इसके अलावा विदेशी सब्जियों की खेती नारकंडा, मटियाना, ठियोग, सपरून घाटी, सिरमौर के नौराधार, कटराई, सैंज घाटी और मनाली में की जाती है। उपभोक्ता की मांग में बदलाव के साथ स्नोपीस हिमाचल की मध्य और ऊंची पहाड़ियों के लिए एक आशाजनक विदेशी सब्जी के रूप में उभर रहा है। स्नोपीस को इसकी खाद्य फली के लिए मूल्यवान माना जाता है जिसमें विभिन्न न्यूट्रास्युटिकल मूल्य होते हैं और इसे सलाद के रूप में बहुत पसंद किया जाता है। फली की भीतरी दीवार पर चर्मपत्र की परत का अभाव इसे कच्ची खपत के लिए उपयुक्त बनाता है। हिमाचल प्रदेश में उगाए गए स्नोपीस दिल्ली के बाजारों में बेचे जा रहे हैं और अच्छा मुनाफा भी प्राप्त कर रहे हैं। बेमौसमी सब्जियों से सब्जी उत्पादक 60,000 से रु. 100,000 प्रति हेक्टेयर, रिटर्न प्राप्त करने में सक्षम हैं जबकि पारंपरिक फसलें केवल 8000 से रु. 10,000 प्रति हेक्टेयर का शुद्ध लाभ प्रदान करती हैं। ये सब्जियां बहुत कम समय में तैयार हो जाती है तथा किसान एक खेत में ही 4 से 5 तरह की सब्जियां उगा सकते हैं।

विभिन्न कृषि–जलवायु परिस्थितियों का लाभ उठाकर, बुवाई के समय को समायोजित करके, किस्मों में सुधार

करके और प्राकृतिक विधि के माध्यम से बेमौसमी सब्जी का उत्पादन किया जाता है। सब्जियों का उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को अच्छे बीजों की आपूर्ति कराना तथा कृषि तकनीकों को विकसित करना जरूरी है। संरक्षित कृषि तकनीकों के माध्यम से वर्ष भर बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन किया जा सकता है। सब्जियों की संरक्षित खेती हमें किसी भी जलवायु परिस्थितियों के अनुरूप सब्जियां उगाने में सक्षम बनाती है और इससे बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन होता है। साल भर सब्जियों की खेती के लिये पॉली हाउस, ग्रीन हाउस, नेट हाउस, पॉली टनल जैसी संरक्षित संरचनाएं सबसे उपयुक्त और किफायती हैं। टमाटर, शिमला मिर्च और खीरा ग्रीन हाउस में सबसे ज्यादा उगाई जाने वाली सब्जियां हैं और ज्यादा मुनाफा देती हैं। इसके अलावा विदेशी सब्जियों को घर की छत पर गमलों में भी उगा सकते हैं। बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन कई अन्य पहलुओं जैसे कृषि–विविधता का दोहन, भूमि और कृषि संसाधनों का बेहतर उपयोग, बेहतर राजस्व, स्व–रोजगार, उद्यमशीलता, निर्यात की संभावना और विदेशी मुद्रा अर्जित करने में भी लाभदायक है। इसके अलावा, देश में भंडारण के बुनियादी ढांचे और सब्जी प्रसंस्करण उद्योग के अभाव में, बेमौसमी सब्जियों की खेती ही एकमात्र व्यवहार्य विकल्प है जो किसान उपज में मूल्य जोड़ सकता है।

बेमौसमी सब्जियों की खेती के लाभ

- साल भर सब्जियों का उत्पादन संभव होने से कुल सब्जी उत्पादन में वृद्धि होती है ।
- उपभोक्ता आजकल ताजी सब्जियां तब भी पसंद करते हैं जब उनका मौसम नहीं होता है और बेमौसमी सब्जियों की खेती इस जरूरत को पूरा कर सकती है।
- भूमि और कृषि संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है।
- बेमौसमी खेती छोटे और गरीब किसानों के लिए भी उपयुक्त है।
- किसानों को साल भर रोजगार मिलता है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। इससे किसानों सब्जी की खेती को अपना मुख्य पेशा बनाने का विश्वास पैदा होता है।
- कभी–कभी ताजी सब्जियों के निर्यात से विदेशी मुद्रा अर्जित करना संभव होता है। इस प्रकार यह राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के सुधार करने में मदद करता है ।
- यह निवारक भोजन का एक बड़ा स्रोत है जो पोषण सुरक्षा में भी योगदान देता है।

निष्कर्ष: भारत की अधिकतम जनसंख्या शाकाहारी होने के कारण यहां सब्जियों की मांग काफी अधिक है और आहार विशेषज्ञ भी प्रतिदिन 300 ग्राम सब्जियों के सेवन की सलाह देते हैं। लेकिन सब्जियों का उत्पादन मांग की तुलना में बहुत कम है क्योंकि सभी प्रकार की सब्जियां साल भर नहीं उगाई जा सकती हैं। ऐसी स्थिति में सब्जियों के साल भर उत्पादन के लिए वैकल्पिक समाधान खोजने की सख्त जरूरत है। इस प्रकार इस मांग को पूरा करने के लिए बेमौसमी सब्जियों की खेती एक मजबूत विकल्प के रूप में उभर रही है। हिमाचल से बेमौसमी सब्जियां आस–पास के मैदानी इलाकों में ताजा सब्जियों की नियमित माँग को पूरा करती है और उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प प्रदान करती हैं। किसान बड़े पैमाने पर विदेशी सब्जियां भी उगा रहे हैं और उन्हें चंडीगढ़, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली जैसे मेट्रो शहरों में बेच रहे हैं और उच्च मूल्य प्राप्त कर रहे हैं। इस तरह ये सुरक्षात्मक भोजन के रूप में जानी जाने वाली सब्जियां पूरे वर्ष आसानी से उपलब्ध और खरीदी जा सकती हैं। इस प्रकार यह लोगों में पोषण की कमी को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राज्य में बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रोत्साहनों और नीतियों की अनिवार्यता है। किसानों की सुविधा के लिए, राज्य सरकार को खेती के सुचारू संचालन के लिए पौध संरक्षण उत्पाद और कृषि उपकरण रियायती दरों पर प्रदान करना चाहिए। इसके अलावा, हिमाचल में सब्जी की खेती केवल एक व्यवसाय नहीं है बल्कि जीवन का एक तरीका है जो ग्रामीण लोगों को नियमित आय के स्रोत, किसानों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है।